|| श्री स्वामी सामर्थ ||

||श्री बालाजी चालीसा ||

।श्री गणेशाय नमः।
श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

।।दोहा।।
श्री गुरु चरण चितलाय के धरें ध्यान हनुमान ।
बालाजी चालीसा लिखे दास स्नेही कल्याण ।।
विश्व विदित वर दानी संकट हरण हनुमान ।
मेंहदीपुर में प्रगट भये बालाजी भगवान ।।

।।चौपाई।।
जय हनुमान बालाजी देवा । प्रगट भये यहां तीनों देवा ।।
प्रेतराज भैरव बलवाना । कोलवाल कप्तानी हनुमाना ।।

मेंहदीपुर अवतार लिया है । भक्तों का उद्धार किया है ।।
बालरूप प्रगटे हैं यहां पर । संकट वाले आते जहां पर ।।

डाकिनी शाकिनी अरु जिंदनीं । मशान चुड़ैल भूत भूतनीं ।।
जाके भय ते सब भग जाते । स्याने भोपे यहां घबराते ।।

चौकी बंधन सब कट जाते । दूत मिले आनंद मनाते ।।
सच्चा है दरबार तिहारा । शरण पड़े सुख पावे भारा ।।

रूप तेज बल अतुलित धामा । सन्मुख जिनके सिय रामा ।।
कनक मुकुट मणि तेज प्रकाशा । सबकी होवत पूर्ण आशा ।।

महंत गणेशपुरी गुणीले । भये सुसेवक राम रंगीले ।।
अद्भुत कला दिखाई कैसी । कलयुग ज्योति जलाई जैसी ।।

ऊंची ध्वजा पताका नभ में । स्वर्ण कलश है उन्नत जग में ।।
धर्म सत्य का डंका बाजे । सियाराम जय शंकर राजे ।।

आन फिराया मुगदर घोटा । भूत जिंद पर पड़ते सोटा ।।
राम लक्ष्मन सिय हृदय कल्याणा । बाल रूप प्रगटे हनुमाना ।।

जय हनुमंत हठीले देवा । पुरी परिवार करत है सेवा ।।
लड्डू चूरमा मिसरी मेवा । अर्जी दरखास्त लगाऊ देवा ।।

दया करे सब विधि बालाजी । संकट हरण प्रगटे बालाजी ।।
जय बाबा की जन जन उचारे । कोटिक जन तेरे आए द्वारे ।।

बाल समय रवि भक्षहि लीन्हा । तिमिर मय जग कीन्हो तीन्हा ।।
देवन विनती की अति भारी । छांड़ दियो रवि कष्ट निहारी ।।

लांघि उदधि सिया सुधि लाए । लक्ष्मण हित संजीवन लाए ।।
रामानुज प्राण दिवाकर । शंकर सुवन मां अंजनी चाकर ।।

केसरी नंदन दुख भव भंजन । रामानंद सदा सुख संदन ।।
सिया राम के प्राण पियारे । जब बाबा की भक्त ऊचारे ।।

संकट दुख भंजन भगवाना । दया करहु हे कृपा निधाना ।।
सुमर बाल रूप कल्याणा। करे मनोरथ पूर्ण कामा ।।

अष्ट सिद्धि नव निधि दातारी । भक्त जन आवे बहु भारी ॥
मेवा अरु मिष्टान प्रवीना । भेंट चढ़ावें धनि अरु दीना ॥

नृत्य करे नित न्यारे न्यारे । रिद्धि सिद्धियाँ जाके द्वारे ॥
अर्जी का आदर मिलते ही । भैरव भूत पकड़ते तबही ॥

कोतवाल कप्तान कृपाणी । प्रेतराज संकट कल्याणी ॥
चौकी बंधन कटते भाई । जो जन करते हैं सेवकाई ॥

रामदास बाल भगवंता । मेंहदीपुर प्रगटे हनुमंता ॥
जो जन बालाजी में आते । जन्म जन्म के पाप नशाते ॥

जल पावन लेकर घर जाते । निर्मल हो आनंद मनाते ॥
क्रूर कठिन संकट भग जावे । सत्य धर्म पथ राह दिखावें ॥

जो सत पाठ करे चालीसा । तापर प्रसन्न होय बागीसा ॥
कल्याण स्नेही । स्नेह से गावे । सुख समृद्धि रिद्धि सिद्धि पावे ॥

॥दोहा॥
मंद बुद्धि मम जानके। क्षमा करो गुणखान ।
संकट मोचन क्षमहु मम। दास स्नेही कल्याण ॥

॥ इति श्री बालाजी चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पर्ण मस्तु||